08.09.19 की मुरली से प्रश्नोत्तर अव्यक्त बापदादा मधुबन रिवाइज़ 23.01.85

दिव्य जन्म की गिफ्ट - "दिव्य नेत्र"

प्रश्न:-आज त्रिकालदर्शी बाप किसे देख रहे हैं?

उत्तर:-अपने त्रिकालदर्शी, त्रिनेत्री बच्चों को देख रहे हैं।

प्रश्न:-बापदादा क्या देख रहे हैं?

उत्तर:-दिव्य बुद्धि और दिव्य नेत्र जिसको तीसरा नेत्र भी कहते हैं, वह नेत्र कहाँ तक स्पष्ट और शक्तिशाली है, हर एक बच्चे के दिव्य नेत्र के शक्ति की परसेन्टेज देख रहे हैं।

प्रश्न:-बापदादा ने सभी को कैसी गिफ्ट दी है?

उत्तर:-100 प्रतिशत शक्तिशाली दिव्य नेत्र जन्म की गिफ्ट दी है।

प्रश्न:-बापदादा ने नम्बरवार शक्तिशाली नेत्र नहीं दिया लेकिन इस दिव्य नेत्र को हर एक बच्चे ने कैसे कार्य में लगाया है?

उत्तर:-

अपने-अपने कायदे प्रमाण,

परहेज प्रमाण,

अटेन्शन देने प्रमाण प्रैक्टिकल कार्य में लगाया है। इसलिए दिव्य नेत्र की शक्ति किसी की सम्पूर्ण शक्तिशाली है, किसी की शक्ति परसेन्टेज में रह गई है।

प्रश्न:-बापदादा द्वारा यह तीसरा नेत्र दिव्य नेत्र मिला है, जैसे आजकल साइन्स का साधन दूरबीन क्या करती है?

उत्तर:-दूर की वस्तु को समीप और स्पष्ट अनुभव कराती है, ऐसे यह दिव्य नेत्र भी दिव्य दूरबीन का काम करते हैं। सेकण्ड में परमधाम, कितना दूर है। जिसके माइल गिनती नहीं कर सकते, साइंस का साधन इस साकार सृष्टि के सूर्य चांद सितारो तक देख सकते हैं। लेकिन यह दिव्य नेत्र तीनों लोकों को, तीनों कालों को देख सकते हैं।

प्रश्न:-इस दिव्य नेत्र को अनुभव का नेत्र भी कहते हैं, क्यों?

उत्तर:-अनुभव की आँख, जिस आँख द्वारा 5000 वर्ष की बात इतनी स्पष्ट देखते जैसे कि कल की बात है। हाँ, 5 हजार वर्ष और कहाँ कल! तो दूर की बात समीप और स्पष्ट देखते हो ना।

प्रश्न:-क्या अनुभव करते हो?

उत्तर:-कल मैं पूज्य देव आत्मा थी और कल फिर बनेंगी। आज ब्राह्मण कल देवता। तो आज और कल की बात सहज हो गई ना।

प्रश्न:-शक्तिशाली नेत्र वाले बच्चे क्या देखते रहते हैं?

उत्तर:-अपने डबल ताजधारी सहज सजाये स्वरूप को सदा सामने स्पष्ट देखते रहते हैं।

प्रश्न:-जैसे स्थूल चोला सजा सजाया सामने दिखाई देता और समझते हो अभी का अभी धारण किया कि किया। ऐसे क्या देख रहे हो?

उत्तर:-यह देवताई शरीर रूपी चोला सामने देख रहे हो ना। बस कल धारण करना ही है। दिखाई देता है ना। अभी तैयार हो रहा है वा सामने तैयार हुआ दिखाई दे रहा है?

प्रश्न:-जैसे ब्रह्मा बाप को देखा, क्या देखा?

उत्तर:-अपना भविष्य चोला श्रीकृष्ण स्वरूप सदा सामने स्पष्ट रहा।

ऐसे आप सभी को भी शक्तिशाली नेत्र से स्पष्ट और सामने दिखाई देता है?

अभी-अभी फरिश्ता सो देवता। नशा भी है और साक्षात् देवता बनने का दिव्य नेत्र द्वारा साक्षात्कार भी है।

तो ऐसा शक्तिशाली नेत्र है? वा कुछ देखने की शक्ति कम हो गई है?

प्रश्न:-जैसे स्थूल नेत्र की शक्ति कम हो जाती है तो क्या होता है?

उत्तर:-स्पष्ट चीज़ भी जैसे पर्दे के अन्दर वा बादलों के बीच दिखाई देती है। ऐसे आपको भी देवता बनना तो है, बना तो था लेकिन क्या था, कैसा था इस 'था' के पर्दे के अन्दर तो नहीं दिखाई देता? स्पष्ट है?

प्रश्न:-निश्चय का पर्दा और स्मृति का मणका दोनों शक्तिशाली हैं ना। वा मणका ठीक है और पर्दा कमज़ोर है! एक भी कमज़ोर रहा तो क्या नहीं होगा?

उत्तर:-स्पष्ट नहीं होगा। तो चेक करो वा चेक कराओ कि कहाँ नेत्र की शक्ति कम तो नहीं हुई है?

प्रश्न:-अगर जन्म से श्रीमत रूपी परहेज करते आये हो तो क्या है?

उत्तर:-नेत्र सदा शक्तिशाली है। श्रीमत की परहेज में कमी है तब शक्ति भी कम है। फिर से श्रीमत की दुआ कहो, दवा कहो, परहेज कहो, वह करो तो फिर शक्तिशाली हो जायेंगे। तो यह नेत्र है दिव्य दूरबीन।

प्रश्न:-यह नेत्र शक्तिशाली यंत्र भी है। जिस द्वारा क्या कर सकते हो?

उत्तर:-जो जैसा है, आत्मिक रूप को आत्मा की विशेषता को सहज और स्पष्ट देख सकते हो।

प्रश्न:-शरीर के अन्दर विराजमान गुप्त आत्मा को कैसे देख सकते हो?

उत्तर:-ऐसे देख सकते जैसे स्थूल नेत्रों द्वारा स्थूल शरीर को देखते हो। ऐसे स्पष्ट आत्मा दिखाई देती है ना वा शरीर दिखाई देता है?

प्रश्न:-दिव्य नेत्र द्वारा क्या दिखाई देगा?

उत्तर:-दिव्य सूक्ष्म आत्मा ही दिखाई देगी। और हर आत्मा की विशेषता ही दिखाई देगी। जैसे नेत्र दिव्य है तो विशेषता अर्थात् गुण भी दिव्य है।

प्रश्न:-अवगुण कमजोरी है। कमजोर नेत्र कमजोरी को देखते हैं। जैसे स्थूल नेत्र कमजोर होता है तो क्या होता है?

उत्तर:-काले-काले दाग दिखाई देते हैं। ऐसे कमजोर नेत्र अवगुण के कालेपन को देखते हैं।

प्रश्न:-बापदादा ने ..... नेत्र नहीं दिया है?

उत्तर:-कमजोर नेत्र। स्वयं ने ही कमजोर बनाया है।

प्रश्न:-वास्तव में यह शक्तिशाली यंत्र रूपी नेत्र चलते-फिरते नैचुरल रूप में सदा किसको देखते हैं?

उत्तर:-आत्मिक रूप को ही देखते। मेहनत नहीं करनी पड़ती कि यह शरीर है या आत्मा है। यह है या वह है।

प्रश्न:-यह कमजोर नेत्र की निशानी है, जैसे साइन्स वाले शक्तिशाली ग्लासेज द्वारा सभी जर्मस को स्पष्ट देख सकते हैं। ऐसे यह शक्तिशाली दिव्य नेत्र क्या कर सकते हैं?

उत्तर:-माया के अति सूक्ष्म स्वरूप को स्पष्ट देख सकते हैं इसलिये जर्मस को बढने नहीं देते, समाप्त कर देते हैं। किसकी भी माया की बीमारी को पहले से ही जान समाप्त कर सदा निरोगी रहते हैं। **ऐसा शक्तिशाली दिव्य नेत्र है।**

प्रश्न:-यह दिव्य नेत्र और क्या है?

उत्तर:-दिव्य टी.वी. भी है।

प्रश्न:-आजकल टी.वी. सभी को अच्छी लगती है ना। इसको टी.वी. कहो वा दूरदर्शन कहो इसमें क्या देख सकते हो?

उत्तर:-अपने स्वर्ग के सर्व जन्मों को अर्थात् अपने 21 जन्मों की दिव्य फिल्म को देख सकते हो। अपने राज्य के सुन्दर नजारे देख सकते हो। हर जन्म की आत्म कहानी को देख सकते हो। अपने ताज तख्त राज्य-भाग्य को देख सकते हो। दिव्य दर्शन कहो वा दूरदर्शन कहो। दिव्य दर्शन का नेत्र शक्तिशाली है ना?

प्रश्न:-जब फ्री हो तो क्या करो?

उत्तर:-यह फिल्म देखो, आजकल की डांस नहीं देखना, वह डेन्जर डांस है। फरिश्तों की डांस, देवताओं की डांस देखो। स्मृति का स्विच तो ठीक है ना। अगर स्विच ठीक नहीं होगा तो चलाने से भी कुछ दिखाई नहीं देगा। समझा - यह नेत्र कितना श्रेष्ठ है।

प्रश्न:-आजकल मैजारिटी कोई भी चीज की इन्वेंशन करते हैं तो क्या लक्ष्य रखते हैं?

उत्तर:-कि एक वस्तु भिन्न-भिन्न कार्य में आवे। ऐसे यह दिव्य नेत्र अनेक कार्य सिद्ध करने वाला है।

प्रश्न:-बाप-दादा बच्चों के कमजोरी की कभी-कभी कम्पलेन सुन क्या कहते?

उत्तर:-यही कहते, दिव्य बुद्धि मिली, दिव्य नेत्र मिला, इसको विधि-पूर्वक सदा यूज करते रहो तो न सोचने की फुर्सत, न देखने की फुर्सत रहेगी। न और सोचेंगे न देखेंगे। तो कोई भी कम्पलेन रह नहीं सकती। सोचना और देखना यह दोनों विशेष आधार हैं कम्पलीट होने के वा कम्पलेन करने के। देखते हुए, सुनते हुए सदा दिव्य सोचो, जैसा सोचना वैसा करना होता है इसलिए इन दोनों दिव्य प्राप्तियों को सदा साथ रखो। सहज है ना।

प्रश्न:-हो समर्थ लेकिन बन क्या जाते हो?

उत्तर:-जब स्थापना हुई तो छोटे-छोटे बच्चे डायलाग करते थे भोला भाई का। तो हैं समर्थ लेकिन भोला भाई बन जाते हैं। तो भोला भाई नहीं बनो। सदा समर्थ बनो और औरों को भी समर्थ बनाओ। **समझा- अच्छा।**

सदा दिव्य बुद्धि और दिव्य नेत्र को कार्य में लगाने वाले, सदा दिव्य बुद्धि द्वारा श्रेष्ठ मनन, दिव्य नेत्र द्वारा दिव्य दृश्य देखने में मगन रहने वाले, सदा अपने भविष्य देव स्वरूप को स्पष्ट अनुभव करने वाले, सदा आज और कल इतना समीप अनुभव करने वाले ऐसे शक्तिशाली दिव्य नेत्र वाले त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते!

पर्सनल मुलाकात

1). सहजयोगी बनने की विधि

प्रश्न:-सभी सहजयोगी आत्मायें हो ना। सदा बाप के सर्व सम्बन्धों के स्नेह में समाये हुए। सर्व सम्बन्धों का स्नेह ही क्या कर देता है?

उत्तर:-सहज कर देता है। जहाँ स्नेह का सम्बन्ध है वहाँ सहज है। और जो सहज है वह निरंतर है।

□तो ऐसे सहजयोगी आत्मा बाप के सर्व स्नेही सम्बन्ध की अनुभूति करते हो?

□ऊधव के समान हो या गोपियों के समान?

प्रश्न:-ऊधव क्या करता रहा?

उत्तर:-सिर्फ ज्ञान का वर्णन करता रहा। गोप गोपियाँ प्रभु प्यार का अनुभव करने वाली।

प्रश्न:-तो सर्व सम्बन्धों का अनुभव - यह है विशेषता। इस संगमयुग में यह विशेष अनुभव करना ही क्या है?

उत्तर:-वरदान प्राप्त करना है। ज्ञान सुनना सुनाना अलग बात है। सम्बन्ध निभाना, सम्बन्ध की शक्ति से निरंतर लगन में मगन रहना, वह अलग बात है।

प्रश्न:-तो सदा सर्व सम्बन्धों के आधार पर ..... भव?

उत्तर:-सहयोगी भव। इसी अनुभव को बढ़ाते चलो। यह मगन अवस्था गोप गोपियों की विशेष है। लगन लगाना और चीज़ है लेकिन लगन में मगन रहना - यही श्रेष्ठ अनुभव हैं।

2)

प्रश्न:-ऊंची स्थिति विघ्नों के प्रभाव से परे है - कभी किसी भी विघ्न के प्रभाव में तो नहीं आते हो? ऊंची स्थिति होगी तो क्या होता है?

उत्तर:-ऊंची स्थिति वाले विघ्नों के प्रभाव से परे हो जाते हैं। जैसे स्पेस में जाते हैं तो ऊंचा जाते हैं, धरनी के प्रभाव से परे हो जाते। ऐसे किसी भी विघ्नों के प्रभाव से सदा सेफ रहते।

प्रश्न:-किसी भी प्रकार की मेहनत का अनुभव किन्हें करना पड़ता?

उत्तर:-जो मुहब्बत में नहीं रहते। तो सर्व सम्बन्धों से स्नेह की अनुभूति में रहो। स्नेह है लेकिन उसे इमर्ज करो।

प्रश्न:-सिर्फ अमृतेवेले याद किया फिर कार्य में बिजी हो गये तो क्या हो जाता?

उत्तर:-मर्ज हो जाता। इमर्ज रूप में रखो तो सदा शक्तिशाली रहेंगे।

विशेष चुने हुए अव्यक्त महावाक्य

प्रश्न:-सबके प्रति शुभचिंतक बनो। जो सर्व के शुभचिंतक हैं उन्हें क्या प्राप्त होता है?

उत्तर:-सर्व का सहयोग स्वत: ही प्राप्त होता है।

प्रश्न:-शुभ-चिन्तक भावना क्या करती है?

उत्तर:-औरों के मन में सहयोग की भावना सहज और स्वत: उत्पन्न करती है। स्नेह ही सहयोगी बना देता है। तो सदा शुभ-चिन्तन से सम्पन्न रहो, शुभ-चिन्तक बन सर्व को स्नेही, सहयोगी बनाओ।

प्रश्न:-जितना जो आवश्यकता के समय सहयोगी बने हैं - चाहे जीवन से, चाहे सेवा से.. उनको क्या मिलता है?

उत्तर:-उनको ड्रामा अनुसार विशेष बल मिलता है। अपना पुरुषार्थ तो है ही लेकिन एकस्ट्रा बल मिलता है।

प्रश्न:-सेवा के प्लैन में जितना सम्पर्क में समीप लाओ, उतना क्या होगा?

उत्तर:-सेवा की प्रत्यक्ष रिजल्ट दिखाई देगी।

प्रश्न:-सन्देश देने की सेवा तो करते आये हो, करते रहना लेकिन विशेष इस वर्ष क्या करना है?

उत्तर:-सिर्फ सन्देश नहीं देना, सहयोगी बनाना है अर्थात् सम्पर्क में समीप लाना है। सिर्फ एक घण्टे के लिए वा फार्म भरने के समय तक के लिए सहयोगी नहीं बनाना है लेकिन सहयोग द्वारा उनको समीप सम्पर्क, सम्बन्ध में लाना है।

प्रश्न:-कोई भी सेवा करते हो तो उसका क्या लक्ष्य रखना है?

उत्तर:-यही लक्ष्य रखना है कि ऐसे सहयोगी बनें जो आप स्वयं 'माइट' बन जाओ और वह 'माइक' बन जायें। तो सेवा का लक्ष्य 'माइक' तैयार करना है जो अनुभव के आधार से आपके या बाप के ज्ञान को प्रत्यक्ष करें। जिनका प्रभाव स्वत: ही औरों के ऊपर सहज पड़ता हो, ऐसे माइक तैयार करो।

प्रश्न:-लक्ष्य रखो, कौन-सा?

उत्तर:-कि अपनी एनर्जी लगाने के बजाए दूसरों की एनर्जी इस ईश्वरीय कार्य में लगायें। किसी भी वर्ग के सहयोगी क्षेत्र हर छोटे-बड़े देश में मिल सकते हैं।

प्रश्न:-वर्तमान समय ऐसी कई संस्थाएं हैं, कैसी?

उत्तर:-जिनके पास एनर्जी है, लेकिन उसे यूज़ करने की विधि नहीं आती। उन्हें ऐसा कोई नज़र नहीं आता। वह बड़े प्यार से आपको सहयोग देंगे, समीप आयेंगे। और आपकी 9 लाख प्रजा में भी वृद्धि हो जायेगी।

प्रश्न:-कोई वारिस भी निकलेंगे, कोई प्रजा निकलेंगे। अभी तक जिन्हें सहयोगी बनाया है उन्हों को क्या बनाओ?

उत्तर:-वारिस बनाओ। एक तरफ वारिस बनाओ, दूसरी तरफ माइक बनाओ।विश्व-कल्याणकारी बनो। जैसे सहयोग की निशानी हाथ में हाथ मिलाके दिखाते हैं ना। तो सदा बाप के सहयोगी बनना - यह है सदा हाथ में हाथ और सदा बुद्धि से साथ रहना।

प्रश्न:-कोई भी कार्य करो तो कैसे करो?

उत्तर:-स्वयं करने में भी बड़ी दिल और दूसरों को सहयोगी बनाने में भी बड़ी दिल वाले बनो।

प्रश्न:-कभी भी स्वयं प्रति वा सहयोगी आत्माओं के प्रति, साथियों के प्रति ..... दिल नहीं रखो?

उत्तर:-संकुचित दिल नहीं रखो। बड़ी दिल रखने से - जैसे गाया हुआ है कि मिट्टी भी सोना हो जाती है - कमजोर साथी भी शक्तिशाली साथी बन जाता है, असम्भव सफलता सम्भव हो जाती है।

प्रश्न:-कई ऐसी आत्मायें होती हैं, कैसी?

उत्तर:-जो सीधा सहजयोगी नहीं बनेंगी लेकिन सहयोग लेते जाओ, सहयोगी बनाते जाओ। तो सहयोग में आगे बढ़ते-बढ़ते सहयोग उन्हों को योगी बना देता है। तो सहयोगी आत्माओं को अभी स्टेज पर लाओ, उन्हों का सहयोग सफल करो।

वरदान:- धरनी, नब्ज और समय को देख सत्य ज्ञान को प्रत्यक्ष करने वाले नॉलेजफुल भव

बाप का यह नया ज्ञान, सत्य ज्ञान है, इस नये ज्ञान से ही नई दुनिया स्थापन होती है,

यह अथॉरिटी और नशा स्वरूप में इमर्ज हो लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि आते ही किसी को नये ज्ञान की नई बातें सुनाकर मुंझा दो।

धरनी, नब्ज और समय सब देख करके ज्ञान देना - यह नॉलेजफुल की निशानी है।

आत्मा की इच्छा देखो, नब्ज देखो, धरनी बनाओ लेकिन अन्दर सत्यता के निर्भयता की शक्ति जरूर हो, तब सत्य ज्ञान को प्रत्यक्ष कर सकेंगे।

स्लोगन:- मेरा कहना माना छोटी बात को बड़ी बनाना, तेरा कहना माना पहाड़ जैसी बात को रुई बना देना।

ओम शांति